१ना निक्षयपराइ॥
मनिरुर्वेयात्मकसा॥

१ॐ नमः श्रीरेस्वअगुरुयस्वाह ॥ अथ जिह्वापरिक्षा ह्वाय ॥ पित्तजिह्वाख
च ह्मार्ग कृदिना मानमाधिक ॥ वक्क ध्यामरव पित्त : कफ गुद्वामिपिकुसा ॥ ध्वया
स्वर्थ ॥ ह्वा गुस्थनाम ह्वा ह्वाउ वाढसा : वात ह्वलवकाहिय : ह्याउ सअवसवाढसा :
पित्तधवकासिय : तुथि सला लद स्यं वाढसा : कफ धवकासिय ॥ यथ स्वनाह्वा तुवि
वालयाय ॥ ॥ संनिपात वक्षूस : असाध्यं चवदादिसताम्रिश्रित मिश्रित ह्मयाजि
ह्वाह्म यावद्वे सदा ॥ ध्वया स्वर्थ ॥ हाकु स्य वानसा : संनिपात सिय : असाध्य धाय ॥
वातयाउ : पित्तयाउ : नपाह्वा नसा : वात पित्त धाय ॥ वात श्लेष्मया नपाह्वा नसा : वात

श्लेष्म धाय ॥ वातया : पित्तया : कफया : स्वनां (न) सा संनिपात धाय : पित्तया :
श्लेष्मया : नपाह्वा नसा : पित्त श्लेष्म धाय ॥ यथ भया परिक्षा था : स्ववेद्यपनिसं
नंसिय : ॥ श्री मिश्र वैद्य विनचित जिह्वापरिक्षा ॥ ॥ अथ नाडिपरिक्षा ह्वाय ॥ अ
सावा नपवनया नाडि : हउ नवहन पिउ : पित्तया नाडि : दथु सवहल पिउ : श्लेष्म
या नाडि श्रंन सवल पिउ : संनिपात या नाडि : सकति नवहल पिउ ॥ यथ ना
डियात कुसीय ॥ ॥ नाडीधनं मूत्र स्वाप : ज सौकाहर्पउ गति : काक कलिं
गमंडुक : गतिं पित्त प्रकोपतः ॥ हंस पाला उ गति लं श्लेष्म प्रकोपतः ॥ ॥

लावानिरूं विवर्लिं वः गमनं हनीपानिकं॥ ॥इति कपल्लुरव काथाः॥ विसांमा
गविपसि॥ थ्वयात्र्थं॥ वातयानादिः सलघयाः॥ रुयाग्यागनिनः॥ पित्तयानालि
रूलं कावयाः कमीवाग्याथ्यानयागनिनः॥ श्लेष्मयानाडि हं सपालाजनयागनिन
संनिपातयानाडि रूलं लाह्नकावायानिरुविपागनिनः॥ यथ्रज्ञानितनमंनिश्च
नः नाडिपविक्वासिय॥ ॥वातलयानं श्लेष्मयानं नगा२ लक्ष्मदननाजाः वात
धातुंसिय॥ ॥द्वंद्व द्वंद्ववहनाडि द्वरस थ्वद्वंद्वयात्रूत॥ वातलयानं पित्तयानं
॥ नगा२ लक्षनदनकाजाः वातपित्तधातुसिय॥ ॥पित्तयानं श्लेष्मयानं नगा२

लक्षनदनकाजाः पित्तश्लेष्मधातुसिय॥ थ्वतायां लक्षनदनकाजाः संनिपातसिंव
कासिय॥ यथिंदु समस्त धातुयानाग यांविलालयाय॥ ॥ज्वरान्धमनिः लघुप
नि श्रुरवावहा॥ गोलयानालिः वगनसनिडाः श्रुरवयानं धाडयानाडिः याउसनिर
॥रूनव्यपूर्द्द यानाडीः अति वातयाकनाः धावन रूडायानाडिः अति घातयाना
डिः थ्वमनाडि उर्ध्वं हनिडा॥ नाडिविलानथ्यायता॥ दृधविलयाडाः त्रिवयासाक्षी
य॥ नाडियापरिक्षामयासस्मवक्तापूश्यागमद्रः थ्वमनाडियापरीक्षानिसियः॥
इति नाडिज्ञानविधिसमाप्तः॥ शुभं॥ ॥सम्वत् १००० श्रीश्रीस्वादक्ष [illegible]॥

आशा सफू कुथि
120
ASHA ARCHIVES

[illegible]	श्रीनंद	धनलाभ	वीरतालिकर्म	
	वर्द्धमान			

म	अ	आनंद	वलक्षणि	वधवंधन
म	म	कालदंड	भयसनाक	वोरिकर्म
मं	प्र	धूम्राक्ष	धननाशक	उ वाजाशि
मं	उ	प्रजापति	शुभदाना	हानि यीदा
म	उ	सौम्ययो	धनदाना	पुर्वदि
मं	वि	ध्वांक्षयो	भयदाना	किवि
मं	सि	ध्वजयोग	सर्वसिद्धि	लाभकर्म
मं	दि	श्रीवत्स	श्रीलाभक	[illegible]
मं	अ	वज्रश्री	वज्रभय	[illegible]
मं	श्री	मुद्गरयो	रोगभय	[illegible]
मं	ज्ञ	छत्रयोग	छत्रलाभ	धननाश
मं	प्र	मित्रयोग	मित्रलाभ	[illegible]
मं	उ	मानसयो	श्रीलाभक	[illegible]
मं	[illegible]	[illegible]	सिद्धिदाना	[illegible]
मं	भ	लुंबकयो	मध्यफल	मेदवंधना
मं	ग	उत्पातयो	कार्यनाश	महाभय
मं	[illegible]	मृत्युयोग	मृत्युकर्म	मारिकर्म
मं	[illegible]	काणयो	कार्यनाश	कार्यनाश
मं	उ	सिद्धियो	सिद्धिदाना	जाड्वला
मं	अ	शुभयो	शुभदाना	ललल
म	म	अमृतयो	अमृतनला	प्रश्वदाउ
मं	[illegible]			
मं	[illegible]			
मं	श्री			
मं	प			
		वर्द्धमान	सर्वसिद्धि	

श्रमनश्री
पुत्रलक्ष्मी
गदारख्या
नग
राभय
वृश्री
स्थिरश्री
वर्द्धमान

श्रमनलाभ
कष्टहर्त्ता
रोगदानाशी
गमलाभक
प्राणनाश
बलकर्म
स्थिरकर्म
सर्वसिद्धि

[illegible]
दुःसवलकर्म
रोगसंग्रामीहो
ललितदाउनुक
श्रावाद्रमिक
प्राणनाशक
वृद्धिपारसाक
वहद्रसवन
वहद्रवैसकर्म

अमृतयो	अमृतस	...कन्याकालगत
मुशलयो	कलहक	विवाहादिकर्म
गदाख्य	रोगदाना	अहिज्ञान[illegible]कर्म
मातंगयो	गजलाभ	भैरवबंधनादिकर्म
राक्षसयो	प्राणना	हानि बीजदाउन
चरयोग	कुलकर्म	भूतस्थापनकर्म
स्थिरयो	स्थिरक	स्नानदानकर्म
वर्धमान	सर्वसिद्धि	गृहवस्त्रकर्म

यात्राद्यकर्म

आनंद	धनलाभक	यात्रा[illegible]कर्म
कालदंड	भयदानाक	वधबंधनादि
धूम्राख्य	धननाशक	धननाशकर्म
प्रजापति	शुभनाशक	गृहप्रवेशकर्म
सौम्ययो	धनदाताहो	शांतिकारन
ध्वांक्षयो	भयदाताहो	धनसंचकर्म
ध्वजयो	सर्वसिद्धि	स्नान
श्रीवत्स	श्रीलाभक	शांतिकास्य
वज्रयो	वज्रभक्षक	धनुतापनक
मुद्गरयोग	रोगभयंक	शुभभक्ष
छत्रयो	छत्रलाभ	मौलिसाधन
मित्रयो	मित्रलाभ	मित्रवारकर्म
मानसयो	श्रीलाभक	यात्राविवाह
पद्माख्य	सिद्धिदाताहो	वस्त्रबंधनादि
लुंबकयो	मध्यफल	शांतिकारन
उत्पात	कार्यनाश	उपा[illegible]दिकर्म
मृत्युयो	मृत्युभय	मारिकमभनं
काणयो	कार्यनाश	यात्राहानिक
सिद्धियो	[illegible]	[illegible]

१ सम्बत १८३७ शाके १७०२ नेपालिसम्बत १००

आनन्दयो	सुखदाता	यज्ञावस्त्रगृहक
कालदण्ड	कलह	यथबंधनादिक
धू[illegible]म्र	धननाश	धननाशकर्म
प्रजापति	शुभदाता	वस्त्रविवाहादि
सौम्ययो	[illegible]दाता	यात्राविवाहादि
ध्वांक्षयोग	शुभदाता	गुवार्वेलनकर्म
ध्वजयोग	सर्वसिद्धि	वस्तुयात्राकर्म
श्रीवत्स	श्रीलाभ	व्यापारकर्माग
वज्रयो	वज्रभयं	जातिकर्मगर्भ
मुद्गरयो	रोगभय	मारिकर्मगर्भ
छत्रयोग	[illegible]लाभ	रा[illegible]जसेवाकर्म
मित्रयोग	मित्रलाभ	क्रिमिजानकर्म
मानसयो	श्रीलाभ	यात्राक्रिमिकर्म
पद्माक	सिध्धिद	पैंडाजशाकर्म
लुंपकयो	मध्यक	चौरिज्ञारिजारि
उत्पातयो	कार्यना	कार्यनाशकर्म
मृत्युयो	मृत्युभय	छदिघारीकर्म
काणयो	कार्यनाश	कार्यकीचिन्तगर्भ
सिद्धियो	सिद्धिकयो	वैद्यानांत्यकर्म
शुभयोग	शुभदाता	